CIF IMPACT FACTOR:4.465

North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

ISSN: 2454-2326 Vol. 5, Issue-2 February-2019

Index Copernicus Value: 58.12

A Peer Reviewed Refereed Journal

बिहार में पुष्प व्यवसाय की संभावनायें तथा समस्यायें

*सतीश कुमार पासवान

*शोधार्थी

विषय :– वाणिज्य

वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

पृष्ठभूमि (Backdrop):

समूची दूनिया में पुष्प व्यापार 70 अरब डॉलर है। अब तक पुष्प कृषि पर पश्चिमी देशों का ही आधिपत्य रहा है, लेकिन पिछले दशक में पारम्परिक पुष्प कृषि राष्ट्र जैसे हॉलैण्ड, कोलम्बिया, ईजराइल, केन्या व इटली के अतिरिक्त, जिम्बाब्वे, तंजानिया, नाईजीरिया तथा दक्षिण अफ्रीका, भारत आदि देशों के पुष्प कृषि में प्रवेश होने के फलस्वरूप इस क्षेत्र में किंचित प्रतियोगिता का आभास होने लगा है। हॉलैण्ड पुष्प व्यापार की दृष्टि से अभी भी शीर्ष पर है, जो पुष्पों के समूचे विश्व व्यापार का 60 प्रतिशत से अधिक भाग पर नियंत्रण किए हुए है। भारत में पुष्प कृषि शैशवावस्था में है लेकिन इसमें एक उपयोगी व्यवसाय बनने की प्रबल क्षमता है जो न केवल रोजगार अवसरों का विस्तार करेगा अपितु बहुमूल्य विदेशी विनिमय भी अर्जित करेगा।

मनुष्य के जीवन में पुष्पों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। रंग–बिरंगे विभिन्न आकर्षक आकृतियों वाले सुगन्धित पुष्प सदा से ही मानव मन को मोहते रहे है। आधुनिक मशीनी युग और निरंतर भाग–दौड़ वाले जीवन में पुष्प की क्लान्त मानव शरीर व मन को शान्ति और सुगन्ध प्रदान कर पुनः स्फूर्तिवान बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यही कारण है कि प्रत्येक मनुष्य पुष्पों के प्रति आकर्षण का अनुभव करता है और अपनी परिस्थितियों के अनुरूप

फूलों के पौधे लगाने के लिए प्रयासरत रहता है। कहीं बगीचों में, कही छोटी–छोटी क्यारियों में और कहीं गमलों या डिब्बों में फूलों के पौधे लगे दिखाई पड़ते है।

वर्तमान युग में बागवानी केवल वैयक्तिक रूचि ही नहीं रह गयी है बल्कि इसने एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। यह एक ऐसे व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है जिसमें लाभ अर्जित करने की क्षमता अधिक है। आज संसार के प्रत्येक देश में पुष्पोत्पाद व्यवसायिक रूप में किया जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार संसार के कम से कम 145 देशों में यह व्यवसाय अत्यन्त तेजी से विकसित हो रहा है। इस व्यवसाय की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें अनेक चरणों में लाभ प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए पुष्पों के पौधों के विक्रय से, (कटे) फूलों के विक्रय से, सुखे फूलों व पत्तियों के विक्रय से तथा बीज के विक्रय से भी लाभ प्राप्त होता है। आजकल तो गमलों में लगे पुष्पों के पौधों की मांग भी बहुत अधिक है। विशेष रूप से नगरीय क्षेत्रों में नर्सरी विकसित करके पौधों का विक्रय करना अत्यन्त लाभप्रद हो रहा है। इसके साथ–साथ कटे हुए फुलों की मांग निरंतर बढ़ रही है। और इस मांग को पूरा करने के लिए हमारे देश के विभिन्न नगरों में फुलों की मंडियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। मंडियों की बढ़ती संख्या निश्चित रूप से पुष्प व्यवसाय के लाभप्रद होने का प्रतीक है।

साहित्य पुनरावलोकन (Review of literature)

आधुनिक युग में विदेशों में पुष्पों की मांग बहुत अधिक है। एक अध्ययन के अनुसार विश्व में इस समय प्रतिवर्ष 10,000 करोड़ रूपये मूल्य के पुष्पों का व्यापार होता है और इस व्यापार में प्रतिवर्ष 10 से 15 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया जाता है।

अच्छे स्वरूप और सुगन्ध वाले फुलों की बाजार में कीमत अधिक है जबकि उनकी उत्पादन लागत अपेक्षाकृत कम होती है। इसके कारण फूलों का व्यवसाय अत्यन्त लाभप्रद है। यह तथ्य विशेष रूप से हमारे देश के लिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि पुष्पोत्पादन एक श्रम–प्रधान कार्य है और हमारे देश में श्रम अत्यन्त सस्ता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे श्रमाधिक्य वाले अल्पविकसित देश के लिए फूलों का उत्पादन एक अत्यन्त लाभप्रद व्यवसाय है।

फूलों का दैनिक जीवन में उपयोग निरंतर बढ़ रहा है जिसके कारण अपने देश में भी फूलों की मांग निरंतर बढ़ रही है। विभिन्न उत्सवों तथा आयोजनों पर फूलों की सजावट करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इसी प्रकार फूलों का गुलदस्ता बना कर सजाने के साथ–साथ अवसर के अनुसार इसे उपहार में देने का चलन भी तेजी से बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त पूजा एवं धार्मिक कार्यों के लिए भी फूलों का अत्यधिक प्रयोग हो रहा है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि फूलों का व्यवसाय न केवल निर्यात की दृष्टि से लाभप्रद है वरन् देश में फूलों की मांग में तेजी से हो रही वृद्धि के कारण इनका आन्तरिक व्यापार भी अत्यन्त लाभदायक बन गया है।

फूलों का प्रयोग अनेक उद्योगों में भी कच्चे माल के रूप में किया जाता है। मुख्य रूप से सुगन्ध उद्योग (अथवा इन उद्योग) में फूलों का प्रयोग प्रमुख कच्चे माल के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त अखाद्य तेल उद्योगों में भी सुगन्ध के स्त्रोत के रूप में फूलों का प्रयोग किया जाता है। अनेक फूलों में औषधीय गुण भी पाये जाते है। इन गुणों के कारण फूलों का प्रयोग विभिन्न प्रकार की औषधियों में भी किया जाता है। इन गुणों के कारण फूलों का प्रयोग विभिन्न प्रकार की औषधियों में भी किया जाता है। विभिन्न प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों में भी उपयुक्त प्रजातियों के पुष्पों का प्रयोग उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए किया जाता है। अतः फूल न केवल फूल के रूप में बाजार में मांगे जाते है वरन् उनकी मांग औद्योगिक कच्चे माल के रूप में भी व्यापक रूप से होती है। इस प्रकार पुष्पोत्पादन निरंतर लाभप्रद होता जा रहा है।

फूलों का बाजार विश्वव्यापी है। यह पाया गया है कि जिन देशों में सकल घरेलू उत्पाद का स्तर अधिक होता है वहां फूलों का उपभोग अधिक किया जाता है। यही कारण है कि विश्व के कुल पुष्पोत्पादन का लगभग 50 प्रतिशत अंश पश्चिमी यूरोग के देशों में ही इस्तेमाल कर लिया जाता है। हाल में किये गये अनेक अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ–साथ जापान, चीन, दक्षिणी कोरिया, थाइलैंड और इन्डोनेशिया जैसे देशों में भी फूलों के उपभोग में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी जा रही है। यह भी पाया गया है कि वर्तमान में विश्व में पुष्पों के आयातकों में अमेरिका, जर्मनी, पुष्पों के आयातकों में अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, स्विटजरलैंड और इटली का प्रमुख स्थान है। यह अनुमान किया जा रहा है कि पुष्पों के विश्व बाजार में तेजी की स्थिति उत्पन्न होने वाली है। विशेष रूप में अमेरिका, जापान, दक्षिणी कोरिया, थाइलैंड, हांगकांग तथा पश्चिमी एशियाई देशों में फूलों की मांग में अत्यन्त तीव्रता के साथ

वृद्धि होने के संकेत पाये जा रहे है। इतने विस्तृत बाजार में पुष्पों के आपूर्तिकर्त्ता बहुत अधिक नहीं है मुख्य रूप से नीदरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, स्विटजरलैंड, अमेरिका, थाइलैंड, कोलम्बिया, इजराइल और इटली का नाम पुष्प निर्यातक देशों में लिया जा सकता है। इन देशों में सर्वप्रमुख स्थान नीदरलैंड का है और फूलों के विश्व व्यापार का लगभग 70 प्रतिशत भाग नीदरलैंड का है। फूलों के विश्व व्यापार में इतना अधिक योगदान करने के बाद भी यह पाया गया है कि हाल के वर्षो में जापान और संयुक्त राज्य अमरीका जैसे अधिक दूरी वाले देशों को नीदरलैंड द्वारा किये जाने वाले फूलों के निर्यात में क्रमशतः 13.2 प्रतिशत और 16.0 प्रतिशत की कमी हुई है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रतिवर्ष फूलों की मांग की तुलना में आपूर्ति कम है। अतः इस समय पुष्पों के विश्वव्यापी बाजार में नये आपूर्तिकर्त्ताओं के लिए पर्याप्त स्थान है। इस स्थान को प्राप्त करने के लिए अनेक देश निरंतर प्रयास कर रहे है। इन प्रयासकर्त्ता देशों मे मैक्सिकों, ओमान, पोलैन्ड तथा जिम्बाब्वे के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हमारे देश से किये जाने वाले फूलों के निर्यात में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

भारत में पुष्पों की खेती का विकास करने के लिए उपयुक्त परिस्थितियां विद्यमान है। यहां श्रम अपेक्षाकृत सस्ता है और फूलों की खेती के लि उपयुक्त किस्मों की भूमि भी यहां पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। इतना ही नहीं, यहां की जलवायु भी फूलों की खेती के लिए सर्वथा उपर्युक्त है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के कार्यकारी दल के अनुमान के अनुसार भारत में फूलों की खेती के अन्तर्गत कुल 30,924 हेक्टेयर क्षेत्र था इस सन्दर्भ में अन्य अनेक संस्थाओं और विद्वानों ने भी अनुमान प्रस्तुत किये है। इन सब अनुमानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्त्तमान में हमारे देश में फूलों की खेती के अन्तर्गत कुल क्षेत्र 80,000 से 100,000 हेक्टेयर के बीच है। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस कुल क्षेत्र का लगभग आधा भाग तमिलनाडु, कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश में स्थित है। देश के दक्षिणी भाग में स्थित इन राज्यों के बाद पश्चिम बंगाल, राजस्थान और महाराष्ट का स्थान आता है। देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के पुष्पों की खेती की जाती है। गुलाब, चमेली, गुलदाउदी, चम्पा, गेंदा एस्टर और क्रोसेन्डा की खेती मुख्य रूप से तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के एक बढ़े भूभाग में की जाती है। सुगन्धित गुलाब की व्यवसायिक खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के कन्नौज, कानपुर, हाथरस और अलीगढ़ जनपदों में, कर्नाटक के बेलगाम जनपद में, तमिलनाडु में मदुर में और पंजाब में अमृतसर में की जाती है। इसी प्रकार

ट्यूबर रोज की खेती व्यावसायिक स्तर पर कलकत्ता कोयम्बटूर, नासिक पुणे, मैसूर, शिमोगा और बेलारी जनपदों में की जाती है। आर्किड और एन्थूरियम जैसे फूलों की खेती मुख्य रूप से केरल में व्यावसायिक रूप से होती है जबकि गुलदाउदी की खेती के मुख्य क्षेत्र तमिलनाडु, कर्नाटक, बिहार, महाराष्ट और राजस्थान में स्थित है। इनके अतिरिक्त अनेक आकर्षक फूलों जैसे कारनेशन, ग्लेडिओलस, डेहलिया, सिम्बीडियम, एस्टर, बिगोनिया आदि की व्यावसायिक भी देश के विभिन्न भागों में भी की जाती है। इन पुष्पों के साथ–साथ अनेक प्रकार के आकर्षक शोभाकार पौधों की खेती भी देश में व्यापक रूप से की जा रही है।

शोध समस्या का विवरण (Statement of the Research Problem)

मानव का पुष्पों से रिश्ता सनातन है– अवसर आह्लाद का हो या अवसाद का, पूजा–पाठ का हो या प्रेम प्रसंग का। जापानी इकेबाना भी एक इसी प्रकार की अभिव्यक्ति है और मातम पर पुष्पांजलि अन्य प्रकार की। यहां तक कि पुष्प का खाद्य पदार्थ के रूप में भी प्रयोग किया जाता रहा है और आज भी होता है। लेकिन समय के परिवर्तन के साथ मनुष्य का फूलों से रिश्ता और अधिक गहरा होता जा रहा है जिसे व्यावसायिक स्तर पर पुष्प कृषि के रूप में देखा जा सकता है। भारत में बंगलौर, पुणे, व हैदराबाद तीन प्रमुख कृषि क्षेत्र हैं जो देश के कुल पुष्प उत्पादन के 60 प्रतिशत अंश के लिए उत्तरदायी है। यह मानना होगा कि देश में पुष्प विकास की आधारभूत संरचना लचर बनी हुई है। पुष्प के उचित संसाधन, पैकिंग, संग्रहण तथा परिवजन संबंधी हमारा ज्ञान दुनिया के प्रमुख निर्यातकों की तुलना में कहीं नहीं टिकता, हमारी सड़कें तथा परिवहन साधन भी निम्न स्तर पर ही हैं, यहां तक की हवाई अड्डों पर भी शीतायन सुविधाएं अपर्याप्त है।

भारतीय पुष्प उत्पादकों तथा कृषि विज्ञान संस्थाओं के मध्य अपेक्षित सम्प्रेषण न होने के कारण प्रयोगशालाओं के सफल शोध व तकनीकी उन तक नहीं पहुँच पाते। उत्पादकों का ग्रीन हाउस ज्ञान तथा फसल उगाने के बाद की टेक्नालॉजी के प्रति अनभिज्ञता अपर्याप्त है। इन कमियों को अधिक से अधिक कृषि विज्ञान संस्थाओं के साथ सम्प्रेषण से दूर किया जा सकता है। पुष्प कृषि के बारे में समुचित प्रशिक्षण भी आवश्यक है। किस प्रकार ग्रीन हाउस स्थापित किए जाएं तथा उनकी देखभाल की जाए? किस प्रकार आधुनिक ग्रीन हाउस में उपकरणों का प्रयोग हो? कैसे फसलोपरांत फूलों की पैकिंग हो? आदि ताकि हमारे निर्यात अन्य देशों के निर्यातों से प्रतियोगित में खरे उतरें।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता अन्य महत्वपूर्ण घटक है जो पुष्प के निर्यात व्यापार को प्रभावित कर रहा है। भारत का अन्तराष्ट्रीय पुष्प बाजार में प्रवेश तुलनात्मक रूप में नया अनुभव है। भारत के विदेशी व्यापार में सुस्थापित होने की अपरिमित संभावनाओं को देखते हुए कुछ बातों पर सर्वाधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस दिशा में सारपूर्ण निर्याताधिक्य और पुष्प गुणवत्ता को बनाए रखने के प्रयास अत्यावश्यक है। भारत में फूलों के व्यापार के क्षेत्र में हाल ही में कदम बढ़ाया है। वस्तुतः भारत से फूलों का निर्यात वर्ष 1989 से प्रारंभ हुआ। पुष्पों के निर्यात में विगत वर्षो में तेजी से वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के बाद भी फूलों के विश्व बाजार में भारत का अंश केवल 0.2 प्रतिशत है जो निश्चित रूप से बहुत कम हैं वास्तव में भारत में फूलों का निर्यात बढ़ाने की बहुत अधिक संभावनाएं विद्यमान है। लगभग एक लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में फूलों की खेती की जाती है। हाल में बिहार में फूलों का उत्पादन बढ़ा है जिससे राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार और आय के अवसर काफी बढ़े हैं। तालिका 1 में विभिन्न फूलों की खेती के तहत क्षेत्रफल और उत्पादन के 2009–10 से 2013–14 के जिलावार आँकड़े प्रस्तुत है। तालिका से स्पष्ट है कि बिहार में 2013–14 में लगभग 99 टन गुलाब, 6,799 टन गेंदा, 317 टन बेला और 536 टन ट्यूबरोज का उत्पादन हुआ। वर्ष 2009–10 से 2013–14 के बीच गुलाब का उत्पादन 5.51 प्रतिशत और गेंदा का 7.80 प्रतिशत की दर से बढ़ा।

तालिका 1 : बिहार में फूलों की खेती का क्षेत्रफल और उत्पादन

(क्षेत्रफल हे. में/उत्पादन टन में)

वर्ष	क्षेत्रफल/उत्पादन	गुलाब	गेंदा	बेला	ट्यूबरोज	अन्य	योग
2009–10	क्षेत्रफल	63.55	269.85	91.6	87.45	113.9	626.35
	उत्पादन	80.86	4877.97	268.39	435.05	966.91	6629.18
2010–11	क्षेत्रफल	68.05	283.15	105.15	105.25	126.05	687.65
	उत्पादन	86.52	5119.66	307.46	522.94	1068.23	7104.81
2011–12	क्षेत्रफल	72.9	359.95	113.5	116.65	138.85	801.85
	उत्पादन	95.14	6565.8	348.32	595.45	1210.04	8814.75
2012–13	क्षेत्रफल	73.64	314.70	113.4	110.15	132.6	744.49

	उत्पादन	98.90	5603.12	317.66	535.84	1080.23	7635.75
2013–14	क्षेत्रफल	73.59	363.48	113.4	110.15	132.6	793.22
	उत्पादन	98.90	6798.68	317.66	535.84	1080.23	8831.31
वार्षिक चक्रवृद्धि दर	उत्पादन	5.51	7.80	3.77	4.51	2.36	6.70

स्रोतः कृषि विभाग, बिहार सरकार की वेबसाइट

बिहार राज्य में पुष्पों के उत्पादन, संग्रहण, पैकिंग, विपणन तथा गुणवत्ता संबंधी समस्याएँ विद्यमान है। उचित प्रयासों को अपनाकर राज्य के कृषक उद्यमियों को आमदनी बढ़ायी जा सकती है। हमारा अध्ययन बिहार राज्य में पुष्प व्यवसाय की समस्याओं और संभावनाओं पर केन्द्रित होगा।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the study)

इस अध्ययन का उद्देश्यः–

- पुष्प उत्पादन एवं व्यवसाय के वैश्विक तथा भारतीय परिदृश्य को प्रस्तुत करना,
- बिहार राज्य के पुष्प व्यवसाय की समस्याओं का आकलन करना,
- इस व्यवसाय की बाधाओं को दूर करने के उपाय सुझाना है।

अध्ययन का महत्व (Importance of the Study)

भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत पुष्प कृषि को महत्वपूर्ण क्षेत्र घोषित किए जाने के बाद पुष्प कृषि के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। आज पश्चिम बंगाल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश में भी पुष्प कृषि अब व्यावसायिक स्तर पर की जाने लगी है। एक दशक पहले भारत में व्यावसायिक स्तर पर पुष्प कृषि के बारे में कल्पना नहीं की जा सकी थी, तब पुष्प निर्यात शून्य स्तर पर था। पिछले दशक में पुष्प कृषि ने अपनी व्यावसायिक पहचान दर्ज की है, जिसका कारण न केवल बढ़ती जा रही आंतरिक मांग है अपितु इसका विदेशी बाजारों

में प्रवेश भी है। जिस तरह बधाई–पत्रों की किस्म व स्वरूप में परिवर्तन आ रहा है उसी गति से पुष्पों की माग भी बढ़ रही है। दिलचस्प बात यह है कि फूलों का खाद्य पदार्थ के रूप में उनके स्वाद, रंग और खुशबू के कारण प्रयोग का पुनरूत्थान हो रहा है। फूलों का खाद्य फूल में प्रमुख– लिली, गेंदा–गुलाब कंदपुष्प है। कैलन्डुला की पीत पंखुड़ी चाय सूप व अंडे निर्मित खाद्य में अद्भुत महक देती है। गुलाब की महक युक्त पंखुड़ियों के गुलाब जल व गुलाब सिरप–यहां तक कि चाय में भी प्रयुक्त होती है।

पिछले एक दशक में अकेले दिल्ली में शत–प्रतिशत मांग बढ़ी है, जहां भारतीय फूलों के अलावा विदेशी पुष्प भी लोकप्रिय हो रहे है। दीपावली, वेलेन्टाइन डे तथा अन्य मांगलिक अवसरों (जैसे विवाह) पर पुष्पों की मांग सबसे अधिक होती है। उसमें आर्किड, पैराडाइस, लिली, ट्यूलिप, ग्लेडिया, मैरी–गोल्ड प्रेषिया, एन्थूरियम, गरबेरा, लकी बाम्बे आदि प्रजाति के फूल वह गुलदस्ते कनाट पैलेस ही क्या दिल्ली के महत्वपूर्ण केंद्रों में अपनी छटा बिखेरते देखे जा सकते हैं? अक्टूबर से फरवरी के बीच दिल्ली में फूलों का दो करोड़ रूपये से अधिक का प्रतिदिन व्यापार हो जाता है। दिल्ली आज भारत का सबसे बड़ा पुष्प व्यापारिक केंद्र बन चुका है। दिल्ली सरकार का विशाल पुष्प मण्डी बना रही है।

हमारा अध्ययन बिहार राज्य के संदर्भ में पुष्प व्यवसाय की समस्याओं तथा संभावनाओं को प्रस्तुत कर अपनी उपयोगिता साबित करेगा। राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में पुष्प व्यवसाय की अपार संभावना है।

प्राक्कल्पना (Hypothesis)

हमारा अध्ययन निम्नांकित प्राक्कल्पनाओं पर आधारित होगाः

1. फूलों की व्यावसायिक खेती कर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते है।
2. यह व्यवसाय बहुमुल्य विदेशी मुद्रा अर्जन करने में सक्षम है।
3. पुष्प व्यवसाय में उत्पादन के बजाय भण्डारण तथा विपणन की अधिक समस्या है।

शोध–प्रणाली (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृति का होगा। इस उद्देश्य से आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए–

- प्राथमिक स्त्रोत
- द्वितीयक स्त्रोत–दोनों स्त्रोत की सहायता ली जाएगी।

प्राथमिक आँकड़ो के एकत्रीकरण के लिए साक्षात्कार विधि का उपयोग किया जाएगा। द्वितीयक आँकड़ों के स्त्रोत विभिन्न–

- पत्र–पत्रिकाएँ
- पुस्तकें
- सन्दर्भ वार्षिकी
- दैनिक समाचारपत्रों
- वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री इत्यादि होंगे।

इस तहर एकत्रित आँकड़ों का आवश्यकतानुसार गणितीय यथा–

√ प्रतिशतता

√ अनुपात

√ समानुपात इत्यादि

एवं सांख्यिकीय यथा–

√ माध्य

√ मानक विचलन

√ प्रतिदर्शन

√ प्राक्कल्पना जाँच परीक्षण (काई वर्ग जाँच),

√ टी–परीक्षण

√ सहसम्बन्ध–विश्लेषण इत्यादि

विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण एवं निवर्चन (Analysis and Interpretation) कार्य किया जाएगा।

ग्रंथ–संग्रह (Bibliography)

1. इण्डिया 2014– रिफरेंश एन्यूअल, पब्लिकेशन्स डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इंफार्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
2. गर्ग, आर० डी० एल० (2010), पुष कृषि अवसरों पर रंगीला गुलदस्ता, कुरूक्षेत्र–ग्रामीण विकास को समर्पित पत्रिका, वर्ग 56, अंक–41
3. झा जयशंकर (2011), फूलों से संवारे मिथिला की तकदीर, उद्यम, मिथिलांचल इण्डस्ट्रियल चैम्बर ऑफ कॉमर्स, दरभंगा।
4. तिवारी, अमिताभ (1996) पुष्पोत्पादनः विकास की असीम संभावनाए, योजना, वर्षः 40, अंक–1, अप्रैल।
5. तिवारी, ए०के० और तिवारी, भरत (2011), पुष्प व्यवसायः संभावनायें, समस्यायें तथा समाधान, फल फूल, वर्षः 32, अंक–6, नवम्बर–दिसम्बर
6. बिहारी, विपिन (1976,) रूरल इण्डास्ट्रीलाइजेशन इन इण्डिया, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
7. मोहराना, एस (2006), इन्टरप्रिन्यूरशिप एण्ड एग्री–बिजनेस इन्टरप्राइज, डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, उत्कल यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर।
8. रूद्रदत एवं सुन्दरम, के०पी०एम० (2010), भारतीय अर्थव्यवस्था, एस चांद एण्ड कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
9. सूर्य कुमार, पी०वी०एस० (1999), इक्सपोर्ट ओरिएंटेड एग्रीकल्चर–द पावरहाउस ऑफ एग्री बिजनेस इन इण्डिया, एस बी आई मंथली रिव्यू, जून।
10. सेनगुप्ता, देवाशीष एण्ड कमल राज (2009), फ्लोरीकल्चर मार्केटिंग इन इण्डिया, एक्सेल बुक्स, नई दिल्ली।
11. हैण्डबुक ऑफ एग्रीकल्चर–ए०आई०सी०ए०आर० पब्लिकेशन, नई दिल्ली।